बदलाव

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करणः 2023

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: **bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

अन्यथा जबतक इंगित न किया हो धर्म शास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल के पुनःसंपादित पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित है।

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन

उपदेशः apcwo.org/sermons | **पुस्तकेंः** apcwo.org/books | **चर्च ऐपः** apcwo.org/app
बाइबिल कॉलेजः apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंगः** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्शः chrysalislife.org | **संगीतः** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिपः pamfi.org | **ए.पी.सी. वर्ल्ड मिशंसः** apcworldmissions.org

(Hindi - Change)

बदलाव

विषयसूची

1.	बदलाव–एक आवश्यक प्रक्रिया	1
2.	हमारे उद्देश्यों और इच्छाओं में बदलाव	4
3.	हमारी सोच, रवैय्या, बोलना और आचरण में बदलाव	6
4.	अनपेक्षित बदलावों के लिए तत्पर	8
5.	बदलाव–उन्नति और बढ़ोतरी के लिए आवश्यक	11
6.	बदलाव का आत्मा	12

1

बदलाव–एक आवश्यक प्रक्रिया

बदलाव! हमारे चारों ओर, चीजें निरंतर बदल रही हैं। हम सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, कई तरह के अन्य बदलाव संसार में हमारे चारों ओर घटित होते हुए देखते हैं। चीजें हमेशा जैसी हैं वैसी नहीं रहती। "संसार में आज एक चीज़ निरंतर हो रही है और वह है बदलाव!" इस प्रकार एक कहावत है। शब्द "बदलाव" या तो किसी घटना या प्रक्रिया को दर्शाता है जो चीज़ों को जहां वे वर्तमान में हैं, वहां से बदलकर उन्हें भिन्न बना देती हैं।

बदलाव मसीहियों के लिए भी महत्वपूर्ण है! हमारे मसीही जीवन की शुरूवात पश्चाताप से हुई, जो आवश्यक तौर पर हृदय और मन का, पाप और शैतान से, परमेश्वर के साथ जीवन बिताने की ओर बदलाव या परिवर्तन है। उसी पल, परमेश्वर ने हमें अंदर से बदल दिया। हमारा नया जन्म हो गया! हम मसीह में नई सृष्टि बन गए। एक पल में, परमेश्वर ने हमारी आत्माओं में एक रचनात्मक कार्य किया जो हमें अंधकार से निकालकर ज्योति में, शैतान के बंधन से निकालकर मसीह में स्वतंत्र कर दिया। मसीही जीवन बदलाव की एक लगातार प्रक्रिया है। परमेश्वर ने हमें पहले से ठहराया है कि हम, *"उसके पुत्र के स्वरूप में हों"* (रोमियों 8:29अ)। हम बदलाव की एक निरंतर प्रक्रिया के माध्यम से जैसे हम हैं उस प्रकार के लोगों से बदलकर पूर्ण रूप से मसीह के समान हो जाते हैं। हम बदलाव के उस महान दिन की आशा रखते हैं–जब प्रभु स्वयं तुरही की आवाज के साथ, और *"पलक मारते ही ... सब बदल जाएंगे"* (1 कुरिन्थियों 15:51,52)। जो मरणाधीन हैं वे अमरता को धारण करेंगे। *"हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है"* (1 यूहन्ना 3:2ब)।

मसीह में हमारे जीवन का आरम्भ तुरंत बदलाव की एक घटना के साथ हुआ और बदलाव की दूसरी तात्कालिक घटना के साथ उसका अंत

होगा। परंतु, इन दो बिन्दुओं के बीच निरंतर परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। यह पुस्तक इसी विषय पर चर्चा करती है और मुख्य रूप से प्रेरणात्मक है और इसका उद्देश्य यह है कि हमें प्रोत्साहन दें कि हम इस बदलाव की निरंतर प्रक्रिया में सहभागी हों। हमारे जीवनों के उन क्षेत्रों का विचार करेंगे जिन्हें बदलाव की प्रक्रिया के आधीन होने की ज़रूरत है।

2 कुरिन्थियों 3:18

परंतु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।

यदि हमारा ध्यान प्रभु पर है, तो यह इस बात का अटल परिणाम है कि हम उसकी समानता में बदल जाएंगे। वस्तुतः, हम उसके जितने करीब जाएंगे और उसकी महिमा में हम जितना अधिक देखेंगे, उतना अधिक हम हमारे क्षेत्रों को बदलना आरम्भ करेंगे जिन्हें बदलने की ज़रूरत है। उपर्युक्त वचन हमें बताता है कि हम *"बदलते जा रहे हैं"* (कृपया करके अपूर्ण वर्तमान काल पर ध्यान दें जो उस क्रिया को सूचित करता है जो जारी है)। जब हम बदलते जा रहे हैं, तब हम महिमा से महिमा की ओर उन्नति करते जा रहे हैं। इसलिए बदलाव, एक क्षेत्र से अगले क्षेत्र की ओर बढ़ने के लिए एक आवश्यक प्रक्रिया है। यही आत्मिक वृद्धि या उन्नति को ले आती है। बदलाव के बिना कोई आत्मिक वृद्धि नहीं हो सकती है क्योंकि वृद्धि भी अपने आपमें एक बदलाव की प्रक्रिया है। हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर की इच्छा यह नहीं है कि उसके बच्चों में से कोई बहुत समय तक एक ही आत्मिक दशा में बने रहें। बल्कि, वह चाहता है कि हम आगे बढ़ते रहें। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम गतिहीन बन जाएं।

जब हमारे आत्मिक जीवनों की बात आती है, तब न सिर्फ बदलाव आवश्यक होता है, बल्कि हमारे प्रतिदिन के अस्तित्व के प्रत्येक पहलू में स्पष्ट दिखाई देता है। हमें अपने व्यक्तित्व, आचरण, बुद्धि, कौशल, योग्यता, पैसों, योजनाओं, लक्ष्य और ऐसे ही अन्य बातों में बदलाव का स्वागत करना है। हमें अपने जीवनों के प्रत्येक क्षेत्र में *"महिमा से महिमा की ओर"* बढ़ते

समय हमें संकल्प और बुद्धि के साथ चलने का प्रयास करना होगा। परमेश्वर पृथ्वी पर हमारे जीवनों की हर छोटी बड़ी बात में दिलचस्पी रखता है—शिक्षा, करियर, परिवार, व्यवसाय, और सेवकाई। इन क्षेत्रों में से प्रत्येक में, हमेशा ऊंचे दर्जे की और बेहतरीन चीज़ें होती हैं।

उदाहरण के तौर पर, यदि आप एक सफल डॉक्टर हैं, तो आप बेहतर बनने का प्रयास कर सकते हैं। शायद आप नए मार्गों के बारे में सोच सकते हैं जिसके माध्यम से आप उन लोगों के लिए औषधी लाने में सहायता कर सकते हैं जो उपचार नहीं करा सकते या जिनके पास उपचार के साधन नहीं हैं। आप ऐसी चीज़ों को करने के बारे में सोच सकते हैं, जो पहले आपकी योजना का आवश्यक तौर पर हिस्सा नहीं थे। विद्यार्थी होने के नाते, आप अपने ज्ञान और कार्य सम्पादन में सुधार लाने का प्रयास कर सकते हैं। गृहिणी के रूप में, आप अपने परिवार के लिए निगरानी और आराम की गुणवत्ता में सुधार लाने का प्रयास कर सकते हैं। पासबान होने के नाते, आप अपने उपदेश और संदेशों में सुधार लाने की कोशिश कर सकते हैं। परंतु, इनमें से प्रत्येक केवल तब सम्भव होगा यदि हम "बदलाव" के लिए तत्पर हैं। अपने वाले अध्यायों में, हम इनमें से कुछ क्षेत्रों के बारे में विचार करेंगे।

2
हमारे उद्देश्यों और इच्छाओं में बदलाव

भजन संहिता 51:10
हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा (शुद्ध) **नये सिरे से उत्पन्न कर।**

हमारे उद्देश्य और इच्छाएं अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि अत्यंत आत्मिक और नेकनियत मसीही भी कुछ बातों में गलत उद्देश्य या इच्छा रख सकते हैं। हम में से कोई भी अपने आप ऐसी बुराई के विरोध में सुरक्षित नहीं है। बल्कि, हमें निरंतर इन बातों के खिलाफ सचेत रहना है। परमेश्वर हमें उपदेश देता है, *"सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है"* (नीतिवचन 4:23)। गलत उद्देश्यों के बंधक बनने से अपने हृदयों की रक्षा करने की ज़िम्मेदारी हम पर है। यदि हम अपने हृदयों को जांचते हैं और पहचानते हैं कि क्या वास्तव में ऐसे उद्देश्य और इच्छाएं हैं। यह बदलाव की ओर एक महत्वपूर्ण और पहला कदम है। पवित्र शास्त्र में बार बार बताया गया है कि हम अपने आपको जांचें।

1 कुरिन्थियों 11:28
इसलिये मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए।

1 कुरिन्थियों 11:31
यदि हम अपने आप को जांचते, तो दण्ड न पाते।

2 कुरिन्थियों 13:5
अपने आप को परखो, कि विश्वास में हो कि नहीं; अपने आप को जांचो क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते, कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम निकम्मे निकले हो।

सेवकाई में उद्देश्य

गलत उद्देश्यों और इच्छाओं को पहचानने के बाद, हमें उन्हें स्वीकार करने की और प्रभु से विनती करने की ज़रूरत है कि वह हमें बदल दे। दाऊद के समान प्रार्थना करें: *"हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर"* (भजन संहिता 51:10)। व्यक्तिगत तौर पर, हमारे अपने जीवनों में जब हम अपने लोगों की सेवा करते हैं, तो हमें कई विभिन्न क्षेत्रों में गलत उद्देश्यों के खिलाफ अपनी निरंतर रक्षा करना है। हमें अपने आपसे यह पूछने की ज़रूरत है कि, "मैं यह क्यों कर रहा हूं? मेरा इरादा क्या है? मेरी सच्ची इच्छा क्या है?" उदाहरण के तौर पर, यदि हमें किसी निश्चित स्थान में सेवा करने के लिए बुलाया जाता है, तो हमें प्रभु से यह पूछने की ज़रूरत है कि हमारे मनों को तैयार करे और वहां जाने के लिए हमें शुद्ध उद्देश्य दे। लोग हमारी सेवकाई के लिए जो दान देते हैं उस पर अपना ध्यान केंद्रित करने से हमें अपने हृदयों की रक्षा करना है। जब हम परमेश्वर के प्रेम और सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों की इच्छा रखते हैं, तो हमें इस उद्देश्य से अपने हृदय को बचाए रखना है कि हम "परमेश्वर के अत्यंत अभिषिक्त दास" के रूप में पहचाने जाने की चाह रखें। जब हम सेवा में बढ़ने की कोशिश करते हैं, तो हमें केवल अपनी खुद की "सेवकाई" या "राज्य" को बढ़ावा देने की इच्छा से अपने हृदय की रक्षा करना है। हमें अपने आपको निरंतर यह याद दिलाना है कि यह "परमेश्वर का कार्य" है, "हमारा काम" नहीं और यह "परमेश्वर का राज्य" है, "हमारा राज्य" नहीं।

मैंने सेवकाई में जागरूकता के महत्व पर ज़ोर दिया है क्योंकि हमारे उद्देश्य और इच्छाएं हमारे जीवनों में कई बातों को निर्धारित और प्रभावित करती हैं। बहरहाल, परमेश्वर हमारी बाहरी अभिव्यक्तियों से परे देखता है। *"क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है"* (1 शमुएल 16:7ब)। परमेश्वर हमारे भीतरी मनुष्यत्व में सत्य की चाह रखता है (भजन संहिता 51:6)। आपके उद्देश्यों और इच्छाओं के विषय में निरंतर जागृत रहें। यदि वे सही नहीं हैं, तो प्रभु के पास जाकर उससे **बिनती** करें कि वह आपको **बदल दे**!!

3
हमारी सोच, रवैय्या, बोलना और आचरण में बदलाव

रोमियों 12:2अ
इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए,

इफिसियों 4:23
और अपने मन के आत्मिक (मनोभाव) **स्वभाव में नये बनते जाओ।**

1 तीमुथियुस 4:12
कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल-चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।

प्रभु हमारी सोच और रवैये में बदलाव देखना चाहता है। *"मन के नए हो जाने से"* (रोमियों 12:2) दर्शाता है कि हमारे दृष्टिकोण, प्रवृत्तियों, और जिस तरह हम सोचते हैं बदलाव होना चाहिए। इसके कई आयाम हैं। हमें "सांसारिक विचारों" की सोच से बदलने की या "सांसारिक" प्रवृत्तियों को बदलकर परमेश्वर के विचारों और प्रवृत्तियों को धारण करने की ज़रूरत है। हम अपने आपको "हीन" सोचने से छुटकारा पाने की और अपने मानक को ऊंचा उठाकर परमेश्वर के वचन के अनुसार और विश्वास के दृष्टिकोण से सोचने की ज़रूरत है। हमें से कुछ लोगों को अपने निराशावाद से, "ऐसा-नहीं-किया-जा-सकता" के नकारात्मक दृष्टिकोण से छुटकारा पाने की, और परमेश्वर में सरल विश्वास रखने के द्वारा उपलब्ध बड़ी सम्भावनाओं को देखना आरम्भ करने की ज़रूरत है। हम में से कुछ लोग "पुराने तरीके" से काम करने में इतने डूबे हुए हैं कि हम उस "ताज़े और नए" को स्वीकार करने के लिए इच्छुक नहीं हैं जो प्रभु स्वयं करना चाहता है। हमारी धार्मिक प्रथाओं और परम्पराओं ने हमें अपनी सोच में इस तरह बांध रखा है कि

हम यह मानते हैं कि हमारा परमेश्वर उसे दूसरे किसी तरीके से नहीं कर सकता है जैसा कि हमें सिखाया गया है।

अन्य कुछ लोगों के पास ऐसे स्वप्न हैं जो बहुत छोटे हैं, ऐसी इच्छाएं हैं जो निम्न स्तर की हैं, दर्शन हैं जो इतने धुंधले हैं कि उन्हें इन क्षेत्रों में बदलाव देखने की ज़रूरत ही महसूस नहीं होती। हमें बड़े स्वप्न देखने की, परमेश्वर के लिए बहुत कुछ हासिल करने की इच्छा रखने की, और ऐसे दर्शनों को देखने की ज़रूरत है जो संसार में अंतर लाते हैं। हम में से कुछ—असफलता, पराजय, निराशा, या विपत्ति के अनुभवों के कारण—उदासीनता, लाचारी, या निराशा की अवस्था में गिर चुके हैं कि उनके मन में उन्नति और बढ़ोत्तरी की कोई प्रेरणा, उद्देश्य, प्रयास नहीं है। यदि हम उसे अपना थोड़ा सहयोग दें, तो वह उन सारी बातों को बदल सकता है!! कुछ लोग केवल आलसी होंगे, चीज़ों के बारे में लापरवाह, और निरूत्साही होंगे। हमें हमारी प्रवृत्तियों में भारी परिवर्तन की ज़रूरत है!! कुछ लोग तो निरंतर अपने कामों को प्रलंबित करते हैं और जिसमें उन्हें बदलाव की ज़रूरत है। कुछ लोग "योजना बनाते" हैं और "बातें करते" हैं लेकिन अपने "हाथों को हल से नहीं लगाते।" इसमें भी बदलाव की ज़रूरत है। कुछ लोग डर, घमंड, कड़वाहट, और अन्य चरित्र गुणों में बंधे हुए हैं जो परमेश्वर को प्रसन्नता नहीं देते, और वह उसे भी बदलते हुए देखना चाहता है। परमेश्वर हमारी बोलचाल में ऊंचे स्तरों पर उठाना चाहता है। हमारा बोलना और आचरण विश्वासी को शोभा देने वाला हो।

व्यक्तिगत तौर पर, हमारे जीवनों में जब हम अपने विचारों या प्रवृत्तियों के बारे में जान लेते हैं जो सही नहीं हैं, तो हमें प्रभु के पास जाकर उसके सामने उन्हें स्वीकार करने की और यह प्रार्थना करने की ज़रूरत है कि वह हमें बदल देगा। प्रभु के साथ कई सालों तक चलने के बाद भी, हम हमारे जीवनों में उन क्षेत्रों को पहचानेंगे जिन्हें बदलने की ज़रूरत है। क्या आप आपके अपने जीवन की उन प्रवृत्तियों और विचारशैलियों को पहचान सकते हैं जिन्हें आप परमेश्वर के पास लाकर कहना चाहते हैं, "प्रभु, मुझे अपने जीवन में इसे बदलते हुए देखने की ज़रूरत है?"

4
अनपेक्षित बदलावों के लिए तत्पर

यूहन्ना 3:8
हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहां से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।

आत्मा से जन्म पाने से हमें ऐसे जीवन में प्रवेश मिलता है जहां प्रत्येक बात को पूर्णतया समझाया नहीं जा सकता। कुछ बातों के प्रति हमें केवल समर्पित होने की और अनुभव करने की ज़रूरत है। प्रभु यीशु ने आत्मा द्वारा लाए गए नए जन्म की तुलना उस हवा से की है जो जहां चाहती है वहां बहती है। हम इसका केवल अनुभव कर सकते हैं। हम उसके वास्तविक आरम्भ या गंतव्य स्थान को नहीं जानते। वैसे ही, आत्मा के कई कामों को पूर्ण रूप से समझाया नहीं जा सकता। उसने जो पूरा किया है उसे हम केवल अनुभव करते हैं और जानते हैं। कभी कभी प्रभु उन घटनाओं और परिस्थितियों को हमारे जीवनों में ला सकता है, जिसकी हमें बिल्कुल उम्मीद नहीं होती। हमें पूर्व ज्ञान होता है कि हम ऐसी बातों का सामना करेंगे। वे हमारी योजनाओं का हिस्सा नहीं थीं। फिर भी, सबसे बुद्धिमानी कार्य यह होगा कि हम परमेश्वर की शरण में आए और "वहीं जाएं जहां हवा बहती है।" यह सीखना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम अनपेक्षित बदलावों को सीखने के लिए तत्पर रहें, जो परमेश्वर हमारे जीवनों में लाता है। ये हमारे जीवनों में परिवर्तन के बिंदु हो सकते हैं।

हमारी सेवकाई में बदलाव

एमी (मेरी पत्नी) और मैं इस बारे में कई उदाहरण दे सकते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर ने उन बातों की ओर हमारी अगुवाई करने हेतु जो उसने हमारे लिए रखी थीं अनपेक्षित बदलावों का उपयोग किया। 1995 के आसपास,

मेरे पिता कारोबार के सिलसिले में यू.एस. की यात्रा पर थे। उन्होंने एक रात रुककर न्यू ब्रून्सविक, न्यू जर्सी, जहां हम रहते थे, में हमें भेंट करने का निर्णय लिया। वे एक शनिवार को आए और अगली शाम जाने वाले थे। मेरे पिता हमेशा आफ्रिकन अमेरिकन कलीसिया को भेंट देना चाहते थे क्योंकि उनकी इच्छा थी कि उनकेगीत और आराधना शैली का अनुभव करें। पास में एक आफ्रिकन अमेरिकन कलीसिया थी और इस तरह हम वहां एक रविवार की सुबह चले गए। मैंने उस तरह का उल्लासपूर्ण, स्वतःप्रेरित गीत गाना पहले कभी देखा या अनुभव नहीं किया था। वह बहुत ऊंची आवाज़ में, कानों को लगभग सुन्न करने वाला था, और ऐसा लगता था मानो वह इमारत गिर जाएगी! कम से कम मुझे ऐसा लग रहा था! उस समय तक, मैं कोरियन और अमेरिकन भाइयों और बहनों के साथ विश्वविद्यालय में काम करता था और उनकी निकट संगति में था। हम स्तुति में स्वतंत्रता का अनुभव करते थे, फिर भी मैंने वहां जो देखा उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। उस समय मेरे मन में हज़ारों विचार कौंध गए। मैं अपने हृदय की गहराई में जानता था कि आराधना में इस प्रकार की आज़ादी उचित है। मैं हमेशा स्वतंत्र रूप से स्तुति और आराधना व्यक्त करना चाहता था। परंतु इस आफ्रिकन अमेरिकन कलीसिया में जो कुछ हो रहा था उसकी तुलना में मैं ईंटों की दीवारों के समान सख्त था। बाद में उस दिन जब मैं अकेला था, तब मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं बहुत उलझन में हूं। मेरे अंदर का एक हिस्सा कह रहा था, "प्रभु, मैं वहां फिर वापस जाना नहीं चाहता। मैं उनकेसमान कभी नहीं बन सकता। और मैं उस आवाज़ को सहन नहीं कर सकता।" मेरे अंदर का दूसरा हिस्सा कह रहा था, "प्रभु, मैं सचमुच वह पाना चाहता हूं जो उनकेपास है—आपकी आराधना करने के लिए उस प्रकार की आज़ादी।" खैर, सारांश में, मैं वहां गया और तब एमी भी मेरे साथ गई हम फिर से वहां एक साथ गए। कुछ ही समय में, मुझे उस कलीसिया में सेवकाई करने के अवसर प्राप्त हुआ और हमने ऐसा हर बुधवार की रात किया। हम वहां पर कई प्यारे अमेरिकन भाइयों और बहनों से भेंट कर पाए। हमारी मुलाकात स्पेनिश बोलने वाली दम्पत्ति, मैन्यूएल और तानिया से हुई, जो उस कलीसिया को भेंट दे रहे थे। बाद में, हमें हिस्पैनिक चर्च को भेंट देने का निमंत्रण प्राप्त हुआ, इस कलीसिया का रोपण यही दम्पत्ति

कर रही थी। उसके बाद जल्द ही, हम हिस्पैनिक कलीसिया के जीवन में बहुत कुछ सामायिक करने लगे। मैन्यूएल और तानिया वचन का अध्ययन करने हेतु साप्ताहिक आधार पर हमारे साथ समय बिताने लगे। एमी ने स्पेनिक कलीसिया में संगीत सेवकाई में सहायता की और उनकी सहायता से हम नवम्बर 1996 में सेवकाई के काम से इक्वाडोर गए!

न्यू ब्रून्सविक में मेरे पिता के एक रात रूकने की श्रृंखला प्रतिक्रिया के रूप में जो कुछ हुआ उसे देखें!! अनपेक्षित? अवश्य ही!! क्या हमने उसकी योजना बनाई? अवश्य ही नहीं!! हमने केवल सीखा कि जहां आत्मा की हवा बह रही है वहां जाएं। हमने कभी यह कल्पना नहीं की कि हम आफ्रिकन अमेरिकनों को या हिस्पैनिक समुदायों की सेवा करेंगे। जहां कहीं परमेश्वर का आत्मा बहना चाहता है, वहां हम जाएंगे!! उन अनपेक्षित बदलावों के लिए तत्पर और तैयार रहें जो परमेश्वर आपके जीवन में लाना चाहता है।

5
बदलाव–उन्नति और बढ़ोतरी के लिए आवश्यक

यूहन्ना 12:24
मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।

हम महिमा से महिमा में "बदल गए" हैं। इसलिए, आज हम जिस महिमा के स्तर का अनुभव कर रहे हैं, उससे आगे बढ़ने के लिए, हमें पहले बदलना होगा। उन चीज़ो को जो हमें स्थिर रखती हैं और हमारी प्रगति में बाधा डालती हैं–चाहे वह हमारे उद्देश्य, दृष्टिकोण, आचरण या भाषण हों–बदलना होगा। हमें उठना होगा और इन चीजों को स्वीकार करना होगा कि वे क्या हैं और परमेश्वर की मदद से, हमें उन्हें बदलते हुए देखना होगा। हम उस अकेले *"गेहूं का दान"* के प्रतीक के रूप में विचार कर सकते हैं कि आज हम कहां हैं। यदि हम उस अवस्था में जाना चाहते हैं जहां हम *"बहुत फल"* ला सकते हैं, तो हमें पहले "जमीन में गिरना" होगा, *"मरना"* होगा और तब हम *"बहुत फल"* लाएंगे। यह हममें बदलाव की प्रक्रिया का प्रतीक है। हमें पहले जमीन पर गिरना है और इसके लिए विनम्रता की आवश्यकता होती है। इस तथ्य को स्वीकार करने के लिए कि हमें बदलने की आवश्यकता है, हमें विनम्रता की आवश्यकता है। हमें अपने आप के लिए मरना होगा। यह कई बार एक दर्दनाक प्रक्रिया हो सकती है। तब हम महिमा के अगले स्तर पर उठाए जाएंगे, इस प्रकार हम प्रगति और वृद्धि का अनुभव करेंगे।

6

बदलाव का आत्मा

उत्पत्ति 1:1-3

[1] आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।

[2] और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अंधियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।

[3] तब परमेश्वर ने कहा "उजियाला हो" तो उजियाला हो गया।

प्रभु का आत्मा हमें महिमा से महिमा में बदल देता है। पवित्र आत्मा परिवर्तन का कारक है। पृथ्वी बेडौल, शून्य और अंधकार से भरी थी। परतु परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडरा रहा था। परमेश्वर ने वचन कहा, *"उजियाला हो"* (उत्पत्ति 1:3) और परमेश्वर का सामर्थी पवित्र आत्मा अंधकार के बीच में प्रकाश ले आया। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर का आत्मा इस बेडौल, शून्य और अंधकार से भरी पृथ्वी की सतह पर मंडरा रहा था जब परमेश्वर उन रचनात्मक और पुनर्स्थापनात्मक शब्दों को बोलने के लिए तैयार था। हमें विश्वास है कि पवित्र आत्मा बदलाव का आत्मा है। वही है जो परिवर्तन और बदलाव लाता है। उसने इसे बहुत बड़े पैमाने पर किया था और पृथ्वी को फिर से स्थापित किया गया (उत्पत्ति 1)। फिर, हम उससे और कितनी अपेक्षा कर सकते हैं कि वह हमें परमेश्वर की महिमा से भरकर और हमें बदल कर हम पर कार्य करे, ताकि हम भी उसकी दृष्टि में अच्छे हो सकें। वह हम में केवल उस सीमा तक कार्य करता है, जब तक हम उसके अधीन हो जाते हैं। पवित्र आत्मा के लिए अपने दिल को खोलें अपने आप को उसके सामने प्रस्तुत करें और उसे आपको बदलने के लिए कहें। उसे अपने जीवन के उन क्षेत्रों से निपटने में मदद करने के लिए कहें जिन्हें बदलने की आवश्यकता है।

परमेश्वर का वचन बदलाव लाता है

परमेश्वर के रचनात्मक और पुनर्स्थापनात्मक कार्य में, न केवल पवित्र आत्मा पृथ्वी पर मंडराने लगा, बल्कि परमेश्वर का वचन भी अंधकार और शून्यता के ऊपर बोला गया था (उत्पत्ति 1)। उसी तरह, आत्मा और वचन मिलकर हमारे जीवन में बदलाव लाते हैं। अपने दिल और दिमाग को परमेश्वर के वचन के सामने उजागर करें। इसे स्वयं पढ़ें और मनन करें और परमेश्वर का वचन अपनी परिवर्तनकारी सामर्थ को आपके जीवन में जारी करना शुरू कर देगा।

प्रार्थना

हे प्रभु, मुझे बदल!

प्रिय पिता,

मैं आपके पास यीशु के नाम में आया हूं। हे प्रभु, मेरे जीवन में कुछ चीजें हैं, जिन्हें मैं देखता हूं, जिन्हें बदलने की जरूरत है। हे प्रभु, मुझे अपने वचन की सामर्थ और अपने आत्मा से बदल दीजिए। मैं जहां हूं वहां से आगे मैं बढ़ना चाहता हूं जहां आप चाहते हैं कि मैं रहूं। मैं वह सब बनना चाहता हूं जो आप चाहते हैं कि मैं बनूं। मैं वह सब प्राप्त करना चाहता हूं जो मेरे लिए आपके पास है। हे प्रभु, मेरे हृदय और मेरे आत्मा को बदलिए। मेरे उद्देश्य, मेरे दृष्टिकोण, मेरे भाषण और आचरण को बदलिए। मुझे उन चीजों से छुटकारा पाने में मदद करें जो मुझे आगे बढ़ने और परमेश्वर की बातों में बढ़ने से रोकती हैं।

आमेन।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"*** **(रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति

का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह मुफ्त क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धि पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

आल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केन्द्रित, आत्मा से भरपूर परिवारिक कलीसिया,** एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधार, संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौता के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारी वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। पी. डी. एफ., आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में निःशुल्क ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, निःशुल्क ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक तौर प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु समूहों के लिए हैं और जीवन की चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती हैं।

किशोरों
व्यक्तिगत समायोजन
संबंधपरक चुनौतियां
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले
कार्य संबंधित मुद्दे
परिवार /दम्पत्तिः विवाह पूर्व, वैवाहिक
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी
व्यवहार सम्बंधी विकार
व्यक्तित्व विकार
मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं
तनाव / आघात
शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल
आत्मिक समस्याएं
ज़िंदगी की सीख

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए:

Website: chrysalislife.org
Phone: +91-80-25452617 or toll-free (within India) 1-800-300-00998
Email: counselor@chrysalislife.org

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में निःशुल्क वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 50200068829058
IFSC Code: HDFC0004367
Bank: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru, 560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें:* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

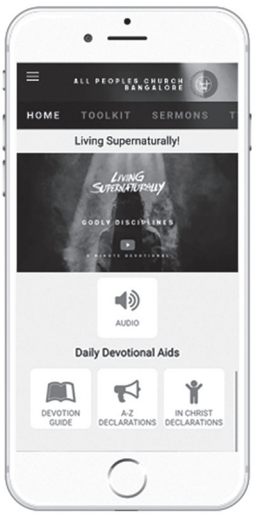

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं:

- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (सी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय स्नातक (बी.टी.एच.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक** (UTC+5:30) कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैंपस:** कैंपस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लें
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लें
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं कि गति से सीखने के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन करने के लिए, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के बारे में अधिक जानकारी केलिए, कृपया इस वेबसाइट को भेंट दें: **apcbiblecollege.org**

बदलाव

आशीष रायचूर